प्रातःक्लास 19-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

****

ओमशान्ति। बाप ने समझाया है यह है भारत के लिए कहानी। क्या कहानी है? सुबह को अमीर और शाम को फकीर। एक कहानी है ना इस पर। सुबह को अमीर था.... यह बातें तुम जबअमीर हो तो नहीं सुनते हो। फकीर और अमीर के संगम पर हीसुनते हो। यह दिल में धारण करना बरोबर भक्ति फकीर बनाती है, ज्ञान अमीर बनाते हैं। दिन और रात भीबेहद के हैं। फकीर और अमीर भी बेहद की बात है ना। बताने वाला भी बेहद का बाप है। सभी पापात्मओं का एक ही बेटरी है पावन बनने का। ऐसे चिटके तुम याद रखो तो भी तुम सदैव खुशी में रहो। बाप कहते हैं बच्चे तुम सबेरे अमीर बन जाते हो फिर शाम को फकीर बन जाते हो। कैसे बनते हो वह भी युक्ति बताते हैं। पतित फकीर से तुम पावन अमीर बनते हो। पतितसे पावन, फकीर से अमीर बनने लिए बात ही दो है मन्मनाभव, मध्याजीभव। यह भी बच्चे जानते हैं यह है पुरुषोत्तम संगम युग। तुम जो भी यहां बैठे होनिश्चय है तुम स्वर्ग के अमीर जरूर बनेंगे। बनेंगे भी नम्बरवारपुरुषार्थ अनुसार। स्कूल में भी ऐसे होता है ना। नम्बरवार क्लास ट्रान्सफर होता है इम्तहान पूरा होता है तो दूसरे क्लास में नम्बरवार जाकर बैठते हैं। वह है हद की बातें। यह फिर है बेहद की बातें। नम्बरवार स्टूडेन्ट माल में जाते हैं। फल अथवा झाड़। बीज तो झाड़ का ही है। यह है ही मनुष्य सृष्टि का बीज। यह भी बच्चे जानते हैं झाड़ वृद्धि को कैसे पाता है। पुराना कैसे होता है। आगे तुम नहीं जानते थे। बाप ने आकर समझाया है। अभी यह है पुरुषोत्तम संगम युग। अभी तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है। दैवी गुण भी धारण करनी है। इस पर कथायें भी हैं। दूसरे का खम्भ निकाल अपने में डाला। खम्भ है दैवी गुणों की। और कोई चीज़ डालने की नहीं है। अपने ऊपर ध्यान देना है। याद की यात्रा से ही पवित्र बनेंगे। और कोई उपाय नहीं। बाप जो सर्व शक्तिवान बेटरी है उन से परा योग लगाना है। उनकी बेटरी तो कब ढीली नहीं होती। वह सतो, रजो, तमो में नहीं आते हैं। क्योंकि उनकी तो कर्मातीत अवस्था है। तुम बच्चे कर्म-बन्धनमें आते हो। कितने कड़े बन्धन हैं। बाबा के पास तो सभी समाचार आते हैं, बान्धेलियां कितनी मार खाती है। बाप कहते हैं कि सिवाय याद की यात्रा और ज्ञान के और कोई उपाय नहीं। ज्ञान भी हड्डियां नरम करती है। यूं भक्ति भी नर्म बनाती है। कहेंगे यह बिचारा पीत आदमी है इन में ठगी आद कुछ नहीं। परन्तु भक्तों में ही ठगी भी बहुत होते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। आत्मा शरीर द्वारा धंधो-धोरी आद करती है। तो इस समय इस जन्म का सभी कुछ स्मृति में आता है। 3-4 वर्ष से लेकर अपनी जीवन कहानी मनुष्य को जरूर याद रहनी चाहिए। कई भूल जाते हैं। 10-12 वर्ष की बात भी नही बता सकते। बुधि कहती है 4 वर्षसे लेकरसारी जीवन कहानी याद रहनी चाहिए। जन्म-जन्मान्तर का तो न नाम, रूप न कुछ भी याद रह सकता है। एक जन्म का बता सकते हैं। फोटो आद रखते हैं। दूसरा जन्म क्या लिया यह पता थोड़े ही पड़ता है। शरीर तो फिर दूसरा मिल जाता है। हरेक आत्मा भिन्न2 नाम-रूप में पार्ट बजाती है। नाम-रूप सब बदल जाता है। यहतो बुधि में है कैसे एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। 84 जन्म, 84 नाम, 84 बाप बने हैं। अंत में फिर तमोप्रधान सम्बन्ध हो जाता है। इस सिर्फ समय जितनासम्बन्ध होता है उतना कभी नहीं होता। इस समय देखो किसको आठ बच्चे होंगे तो आठ भाई-बहिन हों गे। कलियुगी सम्बन्ध की बहुत ही बृधि होती है। इनको बन्धन ही समझना चाहिए। कितने भाई होते हैं फिर वह शादी करे, बच्चा पैदा करे। इस समय सब से जास्त सम्बन्ध होता है। चाचे काके मामे। जितने जास्ती बच्चे उतना ही जास्तीसम्बन्ध। एक ही बार 5-5 बच्चे भी पैदा होते हैं। अखबार में पढ़ा था ना। 5 बच्चे इकट्ठे जन्मे और 5 ही तन्दरुस्त। हिसाब करो कितना सम्बन्ध बढ़ता जावेगा। बहुत ही सम्बन्ध बनते हैं। इस समय तुम्हारा है सब से छोटा। सिर्फ एक बाप से सम्बन्ध। दूसरा कोई से भी तुम्हारा सम्बन्ध नहीं है। सिवाय एक बाप के। एक से ही सम्बन्ध है। सतयुग फिर इससे जास्ती। हीरे जैसा जन्म अभी तुम्हारा है। हाईस्ट बाप बच्चों को एडाप्ट करते हैं। जैसे जो गोद में जाना वसा पाने लिए सो अभी तो

होता है। तुम ऐसे बाप के गोद में आये हो जिस से तुमको स्वर्ग का वर्सा मिलता है। यह है सब से ऊंच बेहद के बाप का वर्सा। तुम ब्राह्मण कुल से ऊंच कोई है नहीं। सभी का योग एक ही साथ है। तुम्हारा आपस में भी कोई सम्बन्ध नहीं। ब्रह्मा कुमार-कुमारियां भाई-बहिन का सम्बन्ध भी तोड़ देते हैं। सम्बन्ध एक से ही होना है। यह है नई बात। पवित्र होकर वापस भी जाना है। ऐसे2 विचार सागर मथन करने से तुम बहुत ही रौनक में आवेंगे। सतयुगी रौनक और कलियुगी रौनक में रात-दिन का फर्क है। भक्ति मार्ग है ही रावण राज्य। पिछाड़ी में सांयस का घमंड भी कितना होता है। जैसे कि सतयुग से भेंट रखते हैं। कल कलकत्ते से समाचार आया था बच्ची ने पूछा अभी स्वर्ग में हो वा नर्क में? तो 4-5 ने कहा हम स्वर्ग में हैं। बुधि में भी रात-दिन का फर्क पड़ जाता है। कोई समझते हैं हम तो नर्क में हैं। फिर समझाना पड़ता है अगर नर्क में हो तो फिर स्वर्ग वाली बनना चाहते हो? स्वर्ग कौन स्थापन करते हैं, यह बहुत मीठी2 बातें हैं। तुम नोट भी करते हो परन्तु वह कापी में ही नोट रह जाती है। समय पर याद नहीं आता। अभी पतित से पावन कैसे बनेंगे। पावन बनाने वाला पतित-पावन परम पिता परमात्मा शिव ही है। वह कहते हैं मामेकं याद करो तो पाप कट जावेंगे। याद से कोई तो आमदनी होगा ना। याद की रसम भी अभी से निकली है। बाप की याद से तुम कितने ऊंच स्वच्छ बन जाते हो। जितनी जो मेहनत करेंगे उतना ही अच्छा पद पावेंगे। बाबा से पूछ सकते हैं। कई पूछते हैं बाबा हमारी बच्ची की दिल लगी है अभी क्या करें। चाहते हैं लव-मैरेज करें। बाप कहते हैं ऐसा है तो फिर तुमको खर्चा करने की दरकार ही नहीं। उनका लव, मैरेज है, तुम क्यो खर्चा करते हो। एक साड़ी क भी देते हैं। वह जाने आपस में। इस हालत में उनकी कोई दवाई नहीं। इससे तो छूटना बड़ा ही मुश्किल है। यहां तो इस समय यह बाप तोड़ने वाला बहुत होता है। सामने कोई आते हैं तो राय दी जाती है। फिर झगड़े भी घर में बहुत हो पड़ते हैं। हर हालत में झगड़ा। विकार के लिए, धन के लिए, जमीन्दारी के लिए झगड़ा। कोई मर जाते हैं लिख-पढ़ कर के नहीं जाते हैं तो फिर झगड़ा हो पड़ता है। अगर स्त्री के नामपर होगा, और बच्चा जीता होगा तो भी मामला बढ़ जाता है। मारने की भी युक्ति निकाल लेते हैं। यहां तो कोई सम्बन्ध है नहीं। सिर्फ एक बाप दूसरा न कोई। बाप तो है बेहद का मालिक। बेहद के बच्चों को सैटीसफाय करते हैं। बात तो बड़ी सहज है। उस तरफ है स्वर्ग इस तरफ है नर्क। स्वर्ग वासी अच्छे वा नर्कवासी अच्छे? कोई तो कह देते हैं नर्कवासी या स्वर्ग वासी इन बातों में हमारा क्या जाता। जो सयाने समझू होंगे वह कहेंगे स्वर्ग वासी अच्छे। कई स्वर्ग नर्क को जानते ही नहीं। क्यों कि बाप को नहीं जानते हैं। बाप की गोद निकल फिर माया के गोद में चले जाते हैं। तो ज्ञान खलास हो जाता है। बन्दर है ना। बाप भी बन्दर फुल है, ज्ञान भी बन्दर फुल है। सभी बन्दर फुल। इन बन्दरों को समझने वाला भी ऐसा चाहिए। जिसकी बुधि उस बन्दर में भी लगी रहे। रावण तो बन्दर नहीं है। रात दिन का फर्क है। शास्त्रों में तो क्या2 लिख दिया है। कालीदह से निकला फिर सर्प ने डसा काला हो गया। अभी तुम अच्छी रीत समझा सकते हो। कृष्ण के छोटे चित्र में लिखत बड़ी अच्छी है। और ऐसे ऐसे यह चित्र पड़े भी है। यह तो बच्चे जानते हैं बहुत ही छपाये थे। तो कहते थे बाबा 10 हजार क्यो छपाते हैं। बाबा कहते हैं बच्चे को बुधि होती जाती है। भाषाएं भी हो को समझ पाती रहती है। आगे चल कर शायद 250 हजार छपानी पड़े। बाबा तो बच्चों के लिए ही छपाते हैं कृष्ण के चित्र को उठा कर कोई पढ़े तो भी रिफ्रेश हो जाये। 84 जन्मों की कहानी है। जैसे कृष्ण के वैसे तुम स्वर्ग में तो तुम भी आते हो ना। त्रेता में भी आते रहते हैं। ऐसे नहीं त्रेता में जो राजा होते हैं वह त्रेता में ही आवेंगे। पढ़े आगे अनपढ़े जो फेल होते हैं उनको भट्ठी ढोनी पड़ेगी। यह ड्रामा का राज़ बाप ही जान सकते हैं। अभी तुम समझते हो तुम्हारे मित्र-सम्बन्धी आदि सभी नर्कवासी हैं। वैश्यालय के रहने वाले हैं हम पुरुषोत्तम संगम युगी हैं। अभी पुरुषोत्तम बन रहे हैं। बाहर में रहने में और यहां सातरोज रहने में बहुत फर्क पड़ता है। हंसों की संग से निकल फिर बगुलों के संग में चले जाते हैं। बहुत बिगाड़ने वाले भी होते हैं

समाचार तो सभी बाबा के पास आते हैं ना। बहुत बच्चे मुरली की भी प्रवाह नहीं करते बाप समझाते है ऐसी गफ्लत नहीं करना चाहिए। तुमको तो ऐसा खुशबूदार फूल बनना है। रईस का बुधि योग अपने बादशाह रानी से होगा ना। यहां भी ऐसे होता है। मीठे2 बच्चों को रोज समझाते हैं। सिर्फ एक ही बात तुम्हारे लिए काफी है। याद की यात्रा। यहां तुमका संग तो ब्राहमणों का ही है। कहां तुम ऊंच ते ऊंच कहां वह नीच। बहुत बच्चे लिखते हैं बाबा बगुलों के झुण्ड में हम एक हंस क्या करेंगे। कांटा ही लगाते रहते हैं। कितनी मेहनत करनी पड़ती है निकालने लिए। बाप की श्रीमतपर चलने सेपद भी ऊंच मिलेगा। हंस होकर रहो। बगुलों के संग में बगुला न बन जाओ। आश्चर्यवत कथन्ती सुनन्ती .... यह गायन है है ना कुछ न कुछ थोड़ा बहुत अन्दर में नालेज है तो स्वर्ग में तो आवेंगे ना। परन्तु कितना फर्क पड़ जाता है। सजाएं भी कुत कड़ी खावेंगे। वह तो होते हैं आर्डीनरी सजा। यह तो 100% जास्ती सजा मिलती है। बाप कहते हैं तुम मेरी मत पर चले न चल पतित बनते हो तो 100वांडन्ड पड़ जाता है। मेरी निन्दा कराते हो। बगुलों तरफ गये तो तो वह खुश होंगे। तोऐसे पर फिर डन्ड बहुत पड़ जाता है। चण्डाल का जन्म। वह भी तो चाहिए ना। राजाई स्थापन हो रही है ना। यह बातें भी बच्चे भूल जाते हैं। यह भी याद रहे तो भी ऊंच पद पाने लिए पुरुषार्थ करे। नहीं करते हैं तो समझा जाता है एक कान से सुना औरदूसरे से निकला। बाप से योग है नहीं। बगुलों के साथ है। यहां रहते भी बुधि योग बाल-बच्चों तरफ चली जाती है। बाप तो कहते हैं सभी कुछ भूल जाना है। इसको कहा जाता है वैराग्य। उस में भी परसेन्टेज हैं। कहां न कहां खयालात चली जाती हैं। लव मैरेज भी में भी बहुत लव हो जाता है तो बुधि लटक पड़ती हैं। बाप रोज समझाते रहते हैं इस पुरानी दुनिया में रहते हुये इनको भूल जाओ। इन आंखों से तुम जो कुछ देखते हो यह सभी खत्म हो जाना हैं। बुधि का योग नईदुनिया में रहे। बेहद के नई दुनिया के बेहद के सम्बन्धो से बुधि योग रखना है। यह मशीनरी भी वन्डरफुल है। भक्ति मार्ग में भी तुम बाते आये हो आप जब आवेंगे तो हम आप के सिवाय किसको याद नहीं रखेंगे। अभी मैं आया हूं तुम मुझे ऐसे कहते थे नाभक्ति मार्ग में। तो अभी और सभी तरफसे बुधि को हटा लेना पड़े। यह सभी जैसे मिट्टी में मिल जाना हैं। तुम्हारा जैसे मिट्टी के साथ बुधियोग है। मेरे साथ बुधि योग होगा तो मालिक बन जावेंगे। बापकितनासमझदार बनाते हैं। मनुष्य थोड़े ही जानते हैं कि भक्ति क्या है ज्ञान क्या है। अभी तुमको ज्ञान मिला है तब तब भक्ति को भी समझते हो। अभी तुमको फीलिंग आती है भक्ति मार्ग में कितना दुःख है। मनुष्य तो भक्ति करते हैं। अपने को बहुत ही सुखी समझते हैं। फिर भी कहते हैं भगवान आकर फल देंगे। किसको, कैसे फल देंगे वह कुछ नहीं समझते। अभी तुम समझते हो बाप भक्ति का फल देने आये हैं। विष्णु की राजधानी का फल जिस बाप से मिलता है, वह बाप जो डायरेक्शन देते हैं उस पर चलना पड़े ना। इसको कहा जाता है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ ऊंच मत। मत मिलती तो श्रीमत सभी को है ना। फिर कोई चल सकते है कोई नहीं चल सकते हैं। बेहद की बादशाही स्थापन होती है। तुम अभी समझते हो हम क्या थे अभी क्या हालत है। माया एकदम नीचे गिरा देती है। यह तो है जैसे क्रिमुर्दों की दुनिया। बाप खुद कहते हैं यह है पाखण्ड घमण्डों की दुनिया। भक्ति मार्गमें तो तुम जो सुनते थे सभी सत्य2 करते थे। अभी तुम यहां सतसंग आद में जो कुछ सुनेंगे तो हंसते रहेंगे। यह नानसेन्स कितना झूठ बोलते हैं। सभी झूठ ही झूठ सुनाते रहते हैं। सच्च तो एक बाप ही सुनाते हैं। तो जैसे कि बाप को याद भी करना चाहिए। यहां कोई बाहर वाला बैठा हो तो उनके समझ में नहीं आवेगा। कहेंगे पता नहीं, यह क्या सुनाते हैं। सारीदुनियाकहती है आत्मा सर्वव्यापी है। यह कहते हैं वह बाप है। कांध से ना ना करते रहेंगे। तुम्हारे अन्दरसे हां हां निकलती रहेंगी। इसलिए नये को अलो नहीं किया जाता है। अच्छा मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बा का नमस्ते।

::-ओमशान्ति::-